ग्लोबलाइजेशन और सिनेमा : भाषिक घालमेल के बीच संप्रेषणीयता

प्रियंका शुक्ला
शोधार्थी, भाषा विज्ञान विभाग
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय,शिलांग,
मेघालय- 793022
shuklapriyanka512@gmail.com

हमारे जीवन में बदलाव एक विरोधाभासी चीज है, इसे खास संदर्भ में समझने की जरूरत है। आज के हिंदी सिनेमा ने तमाम तरह की रूढ़ियों को तोड़ा है। इसने अपने समय की नब्ज को पहचाना और नया दर्शक वर्ग तैयार किया है, इसमें विषय, भाषा, पात्र, प्रस्तुति सभी स्तरों पर अपने को बदला है। भारतीय दर्शक ने भी सिनेमा के इस परिवर्तित और अपेक्षाकृत समृद्ध रूप को स्वीकार किया है। इधर कुछ ऐसी फिल्में भी बन रही हैं, जिन्होंने सिनेमा और समाज के बने-बनाए ढांचों को तोड़ा है। सिनेमा अपनी प्रारम्भिक अवस्था से ही भारतीय समाज का आइना रहा है। भारतीय सिनेमा ने पिछले पांच-सात दशक पूर्व से ही शहरी दशकों के साथ-साथ सुदूर ग्रामीण अंचलों तक गहरे तक प्रभावित किया और आज भी अपना प्रभाव बनाए हुए हैं। टेलीविजन के आश्चर्यजनक खोज के साथ ही उसने समूचे विश्व में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है। इस क्रम में आज भारत के गाँव-कस्बों तक के सामान्य परिवारों के बीच इसकी पहुँच हो गई है। बुद्धिबक्सा कहलाए जाने वाले इस टेलीविजन के माध्यम से हिन्दी फिल्में तथा फिल्मी गाने धमाल मचा रहे हैं। आज हिंदी की व्यापक लोकप्रियता और इसे संप्रेषण के माध्यम के रुप में मिली आत्म-स्वीकृति किसी संवैधानिक प्रावधान या सरकारी दवाब का परिणाम नही है। मनोरंजन और फिल्म की दुनिया ने इसे व्यापार और आर्थिक लाभ की भाषा के रूप में जिस विस्मयकारी ढंग से स्थापित किया है, वह लाजवाब है। अपने सामर्थ्य से जन-जन को जोड़ने वाली हिंदी की स्वीकारता जहाँ एक ओर बढ़ी है, वहीं वह संचार माध्यम की भाषा के रुप में प्रयुक्त होने वाले समस्त ज्ञान-विज्ञान और आधुनिक विषयों से सहज ही जुड़ गयी है। वह अदालतों में और प्रशासन से जुडती हुई बुद्धिजीवियों और जनता के विचारों के प्रकटीकरण और प्रसारण का आधार भी बनती है। सच्चाई का बयान कर समाज को अफवाहों से बचाती है, और विकास योजनाओं के संबंध में जन शिक्षण का दायित्व भी भली-भांति निभाती है। घटनाचक्रों और समाचारों का जहाँ वह गहन विश्लेषण करती है वहीं वस्तु की प्रकृति के अनुकूल विज्ञापन की रचना करके उपभोक्ताओं को उसकी

अपनी भाषा में बाजार से चुनाव की सुविधा मुहैया कराती है। आज हिंदी इन्हीं संचार माध्यमों के सहारे अपनी संप्रेषण क्षमता का बहुमुखी विकास कर रही है।

सामान्य जीवन में हम सिनेमा की भाषा से उसके व्यवहारों से, चित्रों से, व्यवस्था से बेतरह प्रभावित होते रहते हैं। सिनेमा यानी पर्दे से छूटते ही सिनेमा का क्या होता है, हमारे अपने जेहन में, हमारी वाणी में, सिनेमा कैसे अपनी जगह तलाशता है, ये देखना बेहद मजेदार होता है। फिल्म और समाज के बीच गहरा रिश्ता होता है, जहाँ फिल्म समाज से विषयों का चुनाव करती है, वहीं समाज पर अपना असर भी डालती है। फिल्म की भाषा एक अलग अंदाज-ए-बयाँ लेकर आती है, जो कि हमारी आम बोलचाल की भाषा से कुछ अलग है। इस बात की पड़ताल होनी चाहिए। दूसरे, सिनेमा की भाषा को लेकर ही हरीश द्विवेदी ने एक लेख लिखा था 'इट्स आल काइण्ड्स आफ हिंदी', जिसमें उन्होंने स्थापित किया है कि हिंदी सिनेमा में हर तरह की हिंदी के लिए जगह है। और ये अच्छी बात है। चूंकि सिनेमा में दृश्य भी है, श्रव्य भी और भी बहुत तरह आयोजन भी हैं। जब हम भारतीय सिनेमा पर नजर डालते हैं तो पता चलता है कि सिनेमा की भाषा के प्रचार-प्रसार, साहित्यिक रचनाओं के फिल्मी रुपांतरण, हिंदी गीतों को लोकप्रियता दिलवाने में, हिंदी की उपभाषाओं, बोलियों, सांस्कृतिक एवं जातीय प्रश्नों को उभारने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। हिंदी भाषा की संरचनात्मकता, शैलीवैज्ञानिक अध्ययन, जन संप्रेषणीयता, पटकथा निर्माण, संवाद लेखन, दृश्यात्मकता, संक्षिप्त-कथन, बिंबधार्मिता, प्रतीकात्मकता आदि विभिन्न मानकों को भारतीय सिनेमा ने गढ़ा और निर्मित किया है। सिनेमा की भाषा में देह-भाषा **(Body Language)** का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा स्वयं में अभिनय हो जाती है, जहाँ भाव है, वहाँ अभिनय है। कला माध्यम में भावनात्मक अनुकूलता होती है अर्थात् अभिनय और भाव दोनों ही महत्त्वपूर्ण है। सिनेमा की भाषा में आंगिक इशारे का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। भारतीय सिनेमा हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति का लोकदूत बनकर इन तक पहुँचने की दिशा में अग्रसर है। हिंदी सिनेमा ने बीते सौ सालों में कई बार अपना रूप बदला है। समय के साथ-साथ सिनेमा की तस्वीर भी बदलती चली गई। ये बदलाव फिल्मों में हिंदी भाषा के प्रयोग में भी आए हैं।

भाषा प्रचार की संस्कृति और जातीय प्रश्नों के साथ सिनेमा हमेशा से गतिमान रहा है। उसकी यह प्रक्रिया अत्यंत सहज, बोधगम्य, रोचक, संप्रेषणीय और ग्राहय है। जब हम भारतीय सिनेमा का मूल्यांकन करते हैं तो पाते हैं कि भाषा का प्रचार-प्रसार, साहित्यिक कृतियों का फिल्मी रूपांतरण, हिंदी गीतों की लोकप्रियता, हिंदी की अन्य उपभाषाएं, बोलियों का सिनेमा और सांस्कृतिक एवं जातीय प्रश्नों को उभारने में भारतीय सिनेमा का योगदान जैसे मुद्दे महत्त्वपूर्ण ढंग से हमारे सामने आते हैं। सिनेमा ने हिंदी भाषा की संचारात्माकता, शैली, कथन, बिंब-धर्मिता, प्रतीकात्मकता, दृश्य विधान आदि मानकों को गढ़ा है। आज भारतीय सिनेमा हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति का लोकदूत बनकर चहुं-ओर पहुँचने की दिशा में अग्रसर है। हिंदी के अलावा और भी अन्य भारतीय भाषाओं में फिल्में बनाई गई, लेकिन हिंदी की लोकप्रियता का ग्राफ इन सबसे ऊपर रहा है। जिसकी प्रसिद्धि विश्व के कोने-कोने में फैलती चली गई।

हिंदी को विश्वस्तरीय पहचान दिलाने में हिंदी सिनेमा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। यह एक ऐसे माध्यम के रुप में हमारे बीच है जो अपने आप में कई कलाओं और संस्कृतियों को समेटे हुए है। समय के साथ हिंदी सिनेमा की तस्वीर भी बदल रही है। आज फिल्मों को लेकर नए-नए प्रयोग ज्यादा हो रहे हैं। जिसमें कठिन भाषा का प्रयोग होना जरूरी नहीं है, बस भाषा संप्रेषित भाषा के रूप में होना चाहिए। जिसमें हिंदी के मिश्रित बोलियों के प्रयोग के साथ ही इग्लिश भाषा का प्रयोग तेजी से हो रहा है। फिल्मों के विषय चयन से लेकर संवाद लेखन और पटकथा तक पर क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव दिखने लगा है। हालांकि इस तरह के प्रयोग बॉलीवुड में पहले से ही होता आ रहा है, लेकिन आजकल ये प्रयोग बढ़ गया है। 14 मार्च, 1934 में जब हिंदी फिल्मों का सफर शुरु हुआ तो हिंदी भाषा अपने असली रुप में थी, पर आज पान सिंह तोमर, 'उड़ता पंजाब', 'तनु वेडस मनु', 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' जैसी आदि फिल्मों ने हिंदी सिनेमा में भाषा के ट्रेंड को बदला और फिल्मों में हिंदी के साथ ही क्षेत्रीय-भाषा का इस्तेमाल होने लगा या फिर उन क्षेत्रों में हिंदी बोलने के अंदाज को अपनाया जाने लगा। अब फिल्मों में भारत के अलग-अलग राज्यों के भाषा की सौंधी खुशबू आती है।

सिनेमा के मुख्य किरदार के संवाद अब क्षेत्रीय बोली में लिखे जाते हैं, उदाहरण के लिए तनु वेडस मनु की मुख्य किरदार कंगना रनौत उर्फ कुसुम अपना परिचय देते हुए कहती है तुम्हारा नाम कुसुम सांगवानी से, जिला झझड़ 124507, फोन नं. दौं कोणा दरअसल इस संवाद के जरिए हरियाणवी भाषा को भी व्यापक स्तर पर पहचान मिलती है। ऐसे ही 'बाजीराव मस्तानी' में रणवीर सिंह उर्फ बाजी राव पेशवा के जरिए मराठी भाषा को तो गैंग्स ऑफ वासेपुर में भोजपुरी, उड़ता पंजाब से पंजाबी, तो पान सिंह तोमर के जरिए ब्रज-भाषा हिंदी के साथ मिश्रित हो लोगों तक पहुंची है। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है और भाषा के चयन को लेकर भी अब बदलाव हो रहा हैं। आज के समय में आम बोलचाल की भाषा को बढ़ावा मिलता रहा है, जिसके कारण वह लोगों तक पहुँच सके, आज की फिल्मों की भाषाओं को मार्केट वैल्यू के आधार पर निर्धारित किया जा रहा है, जैसे- युवाओं के लिए रोमांटिक भाषा, लोरी की जगह इग्लिश भाषा का प्रयोग हो रहा है। आज की युवा पीढ़ी इंग्लिश भाषा की दीवानी है, इसलिए फिल्मों में ज्यादातर गानों को इंग्लिश में दर्शाया जा रहा है।

जैसे-

'बन्नों तेरा swegar'
'Swag से करेंगे सबका Swagat'

निष्कर्षतः हम यह भी कह सकते हैं कि - कहीं न कहीं फिल्मों की इन भाषाओं के प्रयोग का सीधा संबंध भारतीय अर्थव्यवस्था को भी समृद्ध करता है। इंग्लिश के साथ-साथ फिल्मों में क्षेत्रीय भाषा और बोलियों का भी व्यापक असर दिखाई देता है। फिल्मों के संवाद और विषय चयन के अलावा हिंदी फिल्मों के गाने भी क्षेत्रीय भाषा और बोली की शब्दावलियों के इस्तेमाल से बनने लगे हैं। जहांॅ हिंदी सिनेमा में खड़ी बोली का इस्तेमाल किया जाता रहा है, उदाहरण के तौर पर पियूष मिश्रा का "आरंभ है प्रचंड, बोले मस्तकों के झुंड, आज जंग की घड़ी की तुम गुहार दो" जैसे हिंदी के गीत लिखे, वहीं उसी हिंदी सिनेमा में अब "जिया हो बिहार के लाला, जिया तू हजार साल" या मैं घणी वावली होगी जैसे क्षेत्रीय शब्दावली के साथ गीतों में नए-नए प्रयोग भी किए जा रहे हैं।

हिंदी फिल्मों में क्षेत्रीय भाषा के प्रभाव से हिंदी का स्तर गिरा नहीं बल्कि क्षेत्रीय भाषा एक बड़े समूह तक पहुंची है और सबने इसे स्वीकारा भी है। अगर इस बदलाव से हिंदी भाषा या हिंदी की फिल्मों को कोई नुकसान होता तो प्रयोग के इस दौर में मोहनजोदाड़ो और जोधा अकबर जैसी खड़ी हिंदी में फिल्में नहीं बनती। लेकिन ये जरूर है कि आज बॉलीवुड में ज्यादातर फिल्मों में खिचड़ी भाषा का इस्तेमाल हो रहा है, जिसमें हिंदी, अँग्रेजी, मराठी, तमिल, गुजराती, भोजपुरी आदि भाषाओं के इस्तेमाल से हिंदी कि स्थिति खराब नहीं हो रही है बल्कि समृद्ध हो रही है। इसके साथ ही भाषा और बोली भी संरक्षित हो रही है, क्योंकि वह किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं रहती और इन सब मिश्रित भाषाओं के प्रयोग का सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में सिनेमा की भाषा जन-जन तक संप्रेषित हो सकें, चाहे वह उच्च-मध्यम या निम्न कोई भी वर्ग के तबके के लोग क्यों न हो।

संदर्भ :

1. Accessed on 5th March 2018] http://www-shabdankan-com/2013/03/language-html
2. Accessed on 8th March] 2018] https://www-bbc-com/hindi/entertainment/2012/09/120907_bollywoodhindi_dk-shtml
3. हिंदी सिनेमा की बदलती भाषा & Navbharat Times Reader's Blog